

वार्तालाप-504, टी.पी.गुडम (आं.प्र.), तारीख-1.2.08

Disc.CD No.504, Dt. 1.2.08, Tadevalligudem (Andhra Pradesh)

0.05-11.15

जिज्ञासु- मुरलियों में आती हैं ना वहाँ प्राइवैसी और सीकेसी का जरूरत नहीं है। प्राइवैसी और सीकेसी जो पैदाईश के लिए सतयुग में जो प्राइवैसी और सीकेसी का जरूरत नहीं है एक प्वाइंट आया बाबा।

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासु- मुरली में।

बाबा- हाँ, जी-2

जिज्ञासु- तो एक बात है संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण जो है वो वायब्रेशन द्वारा पैदाईश करते हैं ना?

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासु- उसमे शुकाणु कैसे डालते हैं माँ के पेट में? शुकाणु-2, वो एक बात है और दूसरी...

....

Time: 0.05-11.15

Student: It is mentioned in the Murlis that there is no need for privacy and secrecy there. There is a point Baba that there is no need for privacy and secrecy for the process of reproduction there.

Baba: Yes.

Student: In the Murlis.

Baba: Yes, yes.

Student: The Confluence Age Lakshmi and Narayan reproduce through vibrations, don't they?

Baba: Yes.

Student: How do they impregnate the mother's womb with the sperm? The sperm. That is one question and another question is....

बाबा- एक-2 बात का जवाब एक बार में लेते जाओ; इकट्ठा नहीं। एक होती है स्थूल चीज और एक होती है सूक्ष्म चीज। वाचा स्थूल है या सूक्ष्म है? स्थूल है और वायब्रेशन सूक्ष्म है। वायब्रेशन का अणु-2 नहीं बनाया जा सकता। क्या?

जिज्ञासु- अणु-2 माना स्थूल चीज बाबा।

बाबा- हाँ। स्थूल चीज नहीं है ना। उसका अणु नहीं होता, लेकिन फिर भी शक्तिशाली होता है। इसी तरह से जैसे पपीते का वृक्ष है, पौधा है। वो मीलों दूर से नर और मादा अपना वायब्रेशन खींच लेते हैं। स्थूल रूप में कोई शुकाणु नहीं होता। और पपीते का फल पेट के लिए बहुत मुफ़ीद होता है।

Baba: Obtain answers to your questions one by one, not all at a time. One is a physical thing and another is a subtle thing. Are words physical or subtle? They are physical and the vibrations are subtle. Vibrations cannot be broken into atoms. What?

Student: Atoms mean a physical thing, Baba.

Baba: Yes. It is not a physical thing, is it? It does not have atoms. Still it is powerful. Similarly, a papaya tree or a plant; the male and female plants pull their vibrations despite being miles apart. They have no sperms in a physical form, and the Papaya fruit is very beneficial (*mufeed*) for the stomach.

जिज्ञासु— मुफीद माना?

बाबा— सुखदाई। पेट को शुद्ध करनेवाला होता है, कोई प्रकार का प्रदूषण पैदा नहीं होगा। ऐसे ही ये जो वायब्रेशन का शुकाणु हैं ये नई सृष्टि के लिए चढ़ती कला है; गिरती कला में नहीं ले जायेगा और सतयुग के आदि से ही राधा और कृष्ण जैसे बच्चे एक-दूसरे को दृष्टि से देखेंगे, दृष्टि के शुकाणु एक-दूसरे में डालेंगे; वो स्थूल होने के कारण बुद्धि रूपी पेट को पवित्र बना के नहीं रख सकते। कुछ न कुछ अंशमात्र पतन जरूर होगा। क्यों? क्योंकि उसमें देह का अंश आ जाता है। आँखे भी भल ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और ज्ञानेन्द्रियाँ में भी सबसे ऊँची स्टेज की इन्द्रियाँ हैं। आत्मा रूपी राजा के बिल्कुल नजदीक रहनेवाली इन्द्रियाँ हैं; परंतु फिर भी देह का अंग हैं। दृष्टि से सृष्टि भी सुधरती है; परंतु मनुष्य की दृष्टि से सृष्टि नहीं सुधर सकते। चाहे सतयुग के देवतायें ही क्यों न उतर आये हो वो भी दृष्टि से सृष्टि को नहीं सुधार सकते। एक बाप ही है जो साकार रथ में प्रवेश करके, साकार ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा अथवा कर्मेन्द्रियों द्वारा भी, सात्विकता के ही वायब्रेशन फेंकता है। सात्विक संग का रंग ही लगाता है। कुसंग नहीं लग सकता, तामसी नहीं बनाए सकता। उसके इस काम के कारण ही उसका नाम क्या पड़ा है?

जिज्ञासु— अमोघवीर्य।

बाबा— नहीं, वो तो एक गुण बता दिया, विशेष गुण है।

Student: What is meant by *mufeed*?

Baba: Beneficial; it is something which cleans the stomach; there will not be any kind of pollution. Similarly, the sperms of vibrations are rising celestial degrees for the new world. It will not cause decrease in celestial degrees. And from the beginning of the Golden Age itself children like Radha and Krishna will see each other through eyes. They will impregnate each other with the sperm of visions. That being physical cannot keep the intellect like womb clean. There will definitely be a trace of downfall to some extent or the other. Why? It is because it includes a part of the body. Although the eyes are also sense organs, and even among the sense organs it is the organ of a highest stage. They are the organs which remain closest to the king-like soul, yet they are a part of the body. The world also improves through vision, but the world cannot reform through the vision of human beings. It is only one Father who enters a corporeal chariot and spreads the vibrations of purity through the corporeal sense organs or through bodily organs. He applies only the colour of pure company. He cannot apply the colour of bad company. He cannot make you degraded. Because of this particular task of His what name does He get?

Student: Amoghveer.

Baba: No, that is a quality, a special quality.

जिज्ञासु— सदाशिव।

बाबा— सदाशिव। सदैव कल्याणकारी है। दृष्टि से भी कल्याणकारी, वायब्रेशन से भी कल्याणकारी, इन्द्रियों से भी कल्याणकारी, वाचा से भी कल्याणकारी। कोई भी हालत में, कोई भी स्थिति में, कोई भी परिस्थिति में बाप का संग का रंग अकल्याणकारी हो ही नहीं सकता। इसलिए उसका नाम काम के आधार पर शिव है। और कोई आत्मा को शिव नहीं कहा जा सकता। तो शिव के पार्ट की ही बात अलग है। वो दृष्टि से भी कल्याण करता है, वायब्रेशन से तो कल्याण करता ही है परंतु वायब्रेशन भी साकार के थू चाहिए। अगर साकार के थू वायब्रेशन न हो तो इस सृष्टि पर उसको आने की भी दरकार नहीं। ऊपर बैठे—2 ही वायब्रेशन देता रहे, प्रेरणा करता रहे। उस आत्मा को भी उसका फल मिल जाता, वो भी स्वर्ग में आ जाते; परंतु उसका पार्ट ही नहीं हैं। जिस तन में प्रवेश होकर के ये कार्य करता है, संग का रंग लगाता है उस तनधारी को ही सारी प्राप्ति होती है। मेहनत का उजूरा मिलता जरूर है। तो मानवीय

आत्माओं के कर्मेन्द्रियों में, ज्ञानेन्द्रियों में चाहे कोई भी स्टेज में रहे हो, उनके संग के रंग से पतन जरूर होगा। सतयुग में भी पतन होता है या नहीं होता है?
जिज्ञासु— होता है।

Student: *SadaaShiv.*

Baba: *SadaaShiv.* He is always benevolent. He is benevolent through the vision, he is benevolent through the vibrations, benevolent through the bodily organs and also benevolent through the words. Under any circumstance, in any situation the company of the Father cannot at all be harmful; this is why on the basis of His task, His name is Shiv. No other soul can be called Shiv. So, the issue of the part [played by] Shiv is unique. He brings benefit through the vision as well as vibrations, but the vibrations are also required through the corporeal. If the vibrations are not created through the corporeal then there is no need for Him to come in this world. He could have given vibrations, He could have given inspiration while sitting above; even that soul would have received its fruits, it could also have come in heaven, but it is not His part at all. The body in which He enters and performs this task, and applies the colour of His company, that bodily being gets all the attainments. He certainly gets the returns for the hard work. So, there will certainly be downfall through the company of the bodily organs, sense organs of the human souls, whatever their stage may be. Does downfall take place in the Golden Age also or not?

Student: It takes place.

बाबा— होता है। नहीं तो कलायें कम कैसे होती हैं। जो—2 अनेक आत्माओं के संग का रंग लगता है या एक—दो आत्माओं का संग का रंग लगता है तो कुछ न कुछ वृत्ति नीचे उतरती है। एक संगमयुग ही है जिसमें परमपिता परमात्मा मुकर्रर रथ में प्रवेश करके दृष्टि से सारी सृष्टि का उद्धार करता है और उसी तन के वायब्रेशन के द्वारा जो—2 आत्मायें उस वायब्रेशन को निमित्त लेने लायक बनती हैं माना अच्छा पुरुषार्थी बनती हैं। जैसे कि द्वादश शिवलिंग गाये हुए हैं। जरूर बाप के सच्चे बच्चे होंगे।

जिज्ञासु— माना सूर्यवंशी जो 12 गुप वो हैं ना।

बाबा— अगर सच्चे बच्चे न हो, कथनी—करनी में उनके अंतर हो तो द्वादश ज्योर्तिलिंगम में गिने नहीं जायेंगे। ज्योति कहा ही जाता है ज्ञान की ज्योति। फिर नम्बरवार आत्मायें हैं जो माला के मणके बनती हैं। सब कल्याण करनेवाले हैं लेकिन कोई एक का आधार लेकर के नहीं रहा जा सकता। नहीं तो मुकर्रर रथ का कोई गायन ही न हो। और, आगे क्या बोल रहे थे?

जिज्ञासु— प्राइवैसी, सीक्रेसी की बात हैं वो दृष्टि.....

Baba: It takes place. Otherwise, how do the celestial degrees decrease? When we are coloured by the company of many souls or when we are coloured by the company of one or two souls, then the vibrations undergo downfall to some extent or the other. It is only in the Confluence Age that the Supreme Father Supreme Soul enters in the permanent chariot and uplifts the entire world through vision and all those souls which become instruments in receiving the vibrations of that body become good *purushartha*. They are famous in the form of twelve Shivalings. They are certainly the true children of the Father.

Student: It means that they are the 12 from the group of *Suryavanshis*, aren't they?

Baba: If the children are not true, if there is a difference between their words and actions, then they will not be counted among the twelve *gyotirlingams*. *Jyoti* means the light of knowledge. Then there are souls (*numberwise*) according to their capacity who become the beads of the rosary. All of them bring benefit, but we cannot take the support of any one of them. Otherwise, there will not be any glory of the permanent chariot. And what else were you asking?

Student: The issue about privacy, secrecy, the vision....

बाबा— प्राइवैसी वहाँ की जाती है जहाँ कुछ चोरी की जाती है, जहाँ कुछ अनर्थ किया जाता है, अकल्याण स्पष्ट दिखाई पड़ता है, कमजोरी दिखाई पड़ती है, पतितपना देखने में आता है, तन की शक्ति क्षीण होते देखी जाती है तो प्राइवैसी की जरूरत होती है। और?

जिज्ञासु— माना सतयुग—त्रेता में ऐसा करते नहीं है न ?

बाबा— प्राइवैसी की क्या दरकार? कोई खराब काम कर रहे हैं क्या?

जिज्ञासु— खराब काम कर नहीं रहे हैं लेकिन देह का भान कुछ होता है ना।

बाबा— देह होती ही नहीं वहाँ।

जिज्ञासु— लेकिन ये इन्द्रियों द्वारा होती हैं ना।

बाबा— जो कर्मन्द्रियाँ हैं उनसे देहभान बढ़ता है।

जिज्ञासु— तो ज्ञानेन्द्रियाँ।

बाबा— ज्ञानेन्द्रियों से देहभान उतना नहीं बढ़ता क्योंकि वहाँ अव्यभिचारी इन्द्रियाँ होती हैं।

Baba: Privacy is practiced where someone steals something, where someone does something wrong, when some harm is clearly visible, where a weakness is visible, where the sinfulness is visible, when the physical power appears to be declining, then privacy is required. Anything else?

Student: In the Golden Age and Silver Age they don't do like that, do they?

Baba: Where is the need for privacy? Are we doing anything bad?

Student: They are not performing a bad task, but there is body consciousness to some extent, isn't there?

Baba: There is no body at all there.

Student: But it takes place through the organs.

Baba: The bodily organs increase the body consciousness.

Student: So, the sense organs.

Baba: Body consciousness does not increase to that extent through the sense organs because the organs are unadulterous there.

11.50—13.25

जिज्ञासु— किन्नर, वो जन्म किस कर्म के फल हैं?

बाबा— इन्द्रियों को जो जास्ती दुरुपयोग करते हैं। क्या? इन्द्रियों को जास्ती दुरुपयोग करते हैं। चाहे स्त्री जन्म में और चाहे पुरुष जन्म में।

जिज्ञासु— दुरुपयोग माना किस रूप में?

बाबा— अरे, हर चीज़ की कोई सीमा होती है। सीमा से परे होकर दुरुपयोग करेंगे चाहे अपना और चाहे दूसरों का। अपना हनन करते हैं तो आत्मघाती बनते हैं और दूसरों का हनन करते हैं तो हत्यारे बनते हैं। तो ऐसी आत्मार्ये जो इन्द्रियों का बहुत हनन कर देती हैं; खासकर कामेन्द्रियों का उनको फिर किन्नर जाति में जन्म लेना पड़ता है। जिनको महाभारत में कहा गया है शिखंडी।

जिज्ञासु— यहाँ की यादगार हैं ना बाबा।

बाबा— इनप्योरिटी से होता है विनाश, सृष्टि गड्ढे की ओर जाती है और प्योरिटी से होती है स्थापना।

Time: 11.50-13.25

Student: Birth as a *Kinnars* (eunuchs) is a result of which actions?

Baba: Those who misuse the organs (of lust) more; what? They misuse the organs more. Whether in the female birth or in the male birth.

Student: Misuse in what form?

Baba: Arey, there is a limit for everything. If they misuse beyond limit, whether their own (organs) or (the organs) of others. If they violate their own limits (of organs), they become suicidal and if they violate the limit of (organs of) others, then they become murderers. So, such souls, which violate the limit of the organs very much, especially the organs of lust, have to take birth in the eunuch community, who have been termed in Mahabharata as Shikhandi.

Student: It is a memorial of the present time, isn't it Baba?

Baba: Impurity leads to destruction, the world falls into a pit and purity leads to establishment.

13.40–21.35

जिज्ञासु— बाबा जो ब्राह्मण जीवन में एक खास बात हैं, मुख्य बात पवित्रता, प्योरिटी, वो उस बात में विजयमाला जो हैं ना वो सम्पन्न हैं ना उस बात में?

बाबा— हाँ, जी। सम्पन्न हैं नहीं, अगर सम्पन्न हो तो जो विजयमाला में आनेवाली वर्तमान में आत्मार्ये हैं अभी वो बेसिक का पुरुषार्थ कर रही हैं, बेसिक पढ़ाई पढ़ रही हैं या एडवान्स का पुरुषार्थ कर रही हैं?

जिज्ञासु— बेसिक पढ़ाई।

बाबा— बेसिक पढ़ाई में त्रुटि ये है, आ गई है; पहले नहीं थी। ये त्रुटि आ गई है कि वो ये समझे बैठे हैं कि दृष्टि से सृष्टि सुधरती है; जब कि ऐसा नहीं है। दृष्टि से सृष्टि 63 जन्मों में बिगड़ती आई है या सुधरती आई है?

जिज्ञासु— बिगड़ती आई है।

बाबा— क्यों? क्योंकि जितनी भी दृष्टि है आत्माओं की वो द्वापरयुग से सब व्यभिचारी बन पड़े। व्यभिचारी दृष्टि, वृत्ति एकाग्र नहीं हो पाती है। अगर एकाग्र हो जाये तो उसकी निशानी है कि सदा निश्चयबुद्धि हो जावेगा। घड़ी—2 निश्चय, घड़ी—2 अनिश्चय इसकी दरकार ही नहीं रहेगी। और?

Time: 13.40-21.35

Student: Baba, the main subject in the Brahmin life is purity; is *vijaymala* (the rosary of victory) complete in that subject?

Baba: Yes. It is not perfect; had it been perfect (in purity), then the souls which are going to be a part of the *vijaymala* at present, are they now making basic *purusharth* (spiritual efforts at a primary level); are they studying basic knowledge or are they making advance *purusharth*?

Student: The basic knowledge.

Baba: There is this defect in the basic knowledge... it has emerged [now]; it was not there earlier. This defect has that they are under the impression that the world improves through vision whereas it is not so. Has the world been degrading through vision or has it been improving?

Student: It has been degrading.

Baba: Why? It is because as regards the vision of the souls; since the Copper Age, all of them have become adulterous. Adulterous vision, vibration cannot become focused. If it [the intellect] becomes focused, then its indication is that it will develop faith forever. There will not be any need to develop faith and lose faith every moment. Anything else?

जिज्ञासु— लेकिन पवित्रता के संस्कार हैं, सम्पन्न नहीं हैं। संस्कार हैं जन्मजन्मान्तर के।

बाबा— विजयमाला में संस्कार हैं परंतु वो संस्कार भी ज्ञान के आधारपर इमर्ज होने हैं। उनको पता ही नहीं है कि सन्यासी बनकर के रहने से पक्की पवित्रता नहीं होती। पक्की पवित्रता प्रवृत्तिमार्ग की देवी— देवताओं की है। बेसिक नॉलेजवाले सन्यासियों का पार्ट बजाए रहे हैं या प्रवृत्तिमार्ग के देवताओं का पार्ट बजाए रहे हैं? कौनसा पार्ट है?

जिज्ञासु— सन्यासी का पार्ट है।

बाबा— सन्यासी का पार्ट है! तुम अकेले बोल रहे हो; ये सब भी तो बोले ना, कांध तो हिलायें। वो तथाकथित ब्रह्माकुमार—कुमारियाँ संग खानेवाले, स्त्री—पुरुष संग रहकर सोनेवाले, संग खेलनेवाले, संग—2 पार्ट बजानेवाले हैं या अलगाव कर देते हैं; दूरबाज—खुशबाज हैं? क्या पार्ट बजाए रहे हैं?

जिज्ञासु— दूरबाज—खुशबाज।

बाबा— दूरबाज—खुशबाज हैं। यहाँ सब नहीं बोल रहे हैं। इसका मतलब यहाँ वालों को भी इस बात का अनुभव, अनुभव नहीं है। और बाप तो बेहद का बाप हैं वो बेहद की प्रवृत्ति निभाता हैं। बेहद की प्रवृत्ति में रहते हुए भी वृत्ति से, दृष्टि से पतित नहीं बनता, चंचल नहीं बनता। निर्लिप्त पार्ट बजाता है। तो विजयमाला के जो भाँति बननेवाले हैं उन्होंने तो पक्की—2 सच्चाई को अभी तक स्वीकार ही नहीं किया है। जब हॉयर नॉलेज लेंगे तब जो प्रवृत्तिमार्ग का ऊँचा लक्ष्य है, पवित्रता की ऊँचे ते ऊँची स्टेज है उसको पकड़ सकेंगे। बेसिक नॉलेज की पढ़ाई पढ़नेवाले और ही तमोप्रधान बनते जा रहे हैं या बेसिक नॉलेज से सतोप्रधान बन रहे हैं?

जिज्ञासु— तमोप्रधान।

Student: But they have the sanskars of purity; they are not perfect. They have sanskars of many births.

Baba: Vijaymala has sanskars (of purity) but even those sanskars have to emerge on the basis of knowledge. They do not know at all that remaining a *sanyasi* does not mean real purity. The real purity is practiced by the deities who follow the path of household. Are the followers of the basic knowledge playing the part of *sanyasis* or are they playing the part of deities who follow the path of household? Which part are they playing?

Student: They are playing the part of *sanyasis*.

Baba: Are they playing the part of *sanyasis*? You are the only person speaking; let others also speak. At least they should nod their heads. Do those Brahmakumar-kumaris eat together? Do husband and wife sleep together, play together, play their parts together? Or do they separate them? Do they feel happy while maintaining a distance from their spouse (*doorbaaz-khushbaaz*)? What kind of a part are they playing?

Student: They feel happy while maintaining a distance from their spouse.

Baba: They feel happy while maintaining a distance from their spouse. Everyone is not speaking here. It means that those sitting here have not experienced this, too. And the Father is a Father in an unlimited sense. He maintains a household in an unlimited sense. Despite living in an unlimited household he does not become sinful, inconstant (*chanchal*) through the vibrations, through vision. He plays a detached (*nirlipta*) part. So, those are going to become the members of *vijaymala* have not accepted the absolute truth yet. When they obtain the higher knowledge, then they will be able to achieve the high goal of the path of household, the highest stage of purity. Are those who follow the basic knowledge becoming more impure or are they becoming pure through the basic knowledge?

Student: Impure.

बाबा— तमोप्रधान बन रहे हैं। ऐसे नहीं है कि जिस आत्मा ने ये प्रतिज्ञा ली, 500 करोड़ आत्माओं के बीच एक ही आत्मा ऐसी प्रतिज्ञा लेती है “जन्म—जन्म लग रगर हमारी वरहूँ शम्भू न तो रहूँ कुँवारी”

जिज्ञासु— क्या मतलब?

बाबा— जन्म जन्मान्तर एक का ही संग का रंग लगे पति—पत्नि के रूप में, और कोई आत्मा का संग का रंग न लगे। अच्छा, तो 63 जन्मों में वो आत्मा पतित नहीं बनती क्या?

जिज्ञासु— बनती है।

बाबा— क्यों पतित बनती है?

जिज्ञासु—.....

Baba: They are becoming impure. It is not as if the soul who has taken this vow... among the 5 billion souls only one soul takes such a vow, *janma-janma lag ragar hamari varahu Shambhu na toh rahu kuwari* (Birth after birth this is my vow, that either I will marry Shambhu or I will remain a virgin).

Student: What does it mean?

Baba: Birth after birth I should be colored by the company of only one soul in the form of a husband or a wife, I should not be coloured by the company of any other soul. OK, so, does that soul not become sinful in 63 births?

Student: It does become (sinful).

Baba: Why does it become sinful?

Student said something.

बाबा— हाँ, विजयमाला की जो हेड है। पार्वती नाम पड़ता है — पार लगानेवाली। वो कलियुग के अंतिम जन्म में आते—2 पतित बनती है या नहीं बनती है?

जिज्ञासु— बनती है।

बाबा— कारण? व्यभिचारी तो नहीं है।

जिज्ञासु— व्यभिचार नहीं, देहभान में हो जाती है ना।

बाबा— हाँ, भल व्यभिचारी नहीं है, परंतु जिसके साथ संग का रंग लगता है। वो कैसा है? वो जन्मजन्मान्तर का बना हुआ राजा है बड़े ते बड़ा कि नहीं?

जिज्ञासु— है।

बाबा— और पतित राजाओं में सबसे जास्ती पतित बननेवाला है या नहीं?

जिज्ञासु— है।

बाबा— तो उसके संग का रंग नहीं लगता?

जिज्ञासु— लगता है।

Baba: Yes, the head of the rosary of victory (*vijaymala*) is named Parvati – *paar lagaaney vaali* (the one who helps us go across). Does she become sinful in the last birth of the Iron Age or not?

Student: She does become.

Baba: What is the reason? She is not adulterous.

Student: She may not be adulterous, but she becomes body conscious, does she not?

Baba: Yes, although she is not adulterous, how is the one, whose company colors here? Has that person (whose company she kept) been a biggest king for many births or not?

Student: Yes.

Baba: And does he become the most sinful one among the sinful kings or not?

Student: Yes.

Baba: So, is she not coloured by his company?

Student: Yes.

बाबा— लगता तो है। तो 63 जन्मों में भी नीचे तो गिरना हो गया। अच्छा, वहाँ की बात छोड़ दी जाये। अभी संगमयुग में जो शूटिंग पीरियड है उसमें तो संग का रंग नहीं लग रहा है?

जिज्ञासु— लग रहा है।

बाबा— कैसे?

जिज्ञासु— अनेक आत्मा के संग के रंग में आते हैं ना।

बाबा— हाँ, वहाँ दृष्टि, वृत्ति का ज्ञान ही नहीं है कि कौनसी दृष्टि से सृष्टि सुधरती है; इसलिए वो सारे ही शिवोहम् बनकर के बैठे हुए हैं। और सारे ही शिव बनकर के बैठ जायेंगे तो जो शिव बनकर के बैठेंगे उनकी अपनी दृष्टि प्रदूषित होगी कि नहीं होगी?

जिज्ञासु— होगी।

बाबा— प्रदूषित होती है। दृष्टि पतित बनती जाती है। और दृष्टि से भी बड़ा पतन होता है। आँखे जितना धोखा देती हैं उतना कोई और अंग धोखा नहीं देता है।

Baba: She is coloured (by his company). So, even in 63 births, downfall took place. OK, leave the the topic of those births. She is not being coloured by the company in the shooting period of the Confluence Age now?

Student: She is being coloured.

Baba: In what way?

Student: She comes in the color of the company of many souls, doesn't she?

Baba: Yes, there is no knowledge at all of vision, vibrations there as to which vision brings the world reform; this is why all of them have considered themselves to be Shiva (*Shivohum*). And if all of them become Shiv, will the vision of those who sit as Shiv be polluted or not?

Student: It will be.

Baba: It will be polluted. The vision goes on becoming sinful and the vision also brings great downfall. No organ deceives as much as the eyes deceive.

22.00—24.45

जिज्ञासु— नवग्रह में शनि है उसको भी शनीश्वर कहा जाता है ना। शनीश्वर ऐसा भक्तिमार्ग में कहते हैं। उसको ईश्वर नाम क्यों आया? वो देहअभिमानि है।

बाबा— शनिदेव जो है वो देव तो है लेकिन अष्ट देवों में नहीं है। भक्तलोग तो किसी को भी ईश्वर कह देते हैं, क्या? कोई को भी ईश्वर कह देंगे; उनकी बात तो छोड़ो। ईश्वर का मतलब होता है ईश माना शासन करनेवाला और वर माना श्रेष्ठ। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ शासन करनेवाला। जब शासन करने के लिए आता है तो सबको प्यार ही प्यार से चलाता है। वो प्यार का सागर है। चाहे माँ के रूप में पार्ट बजाता है, चाहे बाप के रूप में पार्ट बजाता है, चाहे टीचर के रूप में पार्ट बजाता है लेकिन प्यार से ही पालना देता है; वो धर्मराज नहीं बनता और प्यार से शासन करते हुए भी नीचे गिराता है या ऊपर उठाता है?

जिज्ञासु — ऊपर उठाता है।

Time: 22.00-24.45

Student: There is Shani among the nine planets. He is also called Shanishvar. The word Shanishvar is used in the path of *bhakti*. Why has *Ishvar* (God) been suffixed to his name? He is body conscious.

Baba: Shanidev is indeed a deity, but he is not included among the eight deities. The devotees call any deity *Ishvar*. What? They call anyone *Ishvar*; leave them alone. *Ishvar* means – ‘*Ish*’, i.e. ruler and ‘*var*’ means righteous. The one who rules in the most righteous way. When He comes to rule, He manages everyone with love. He is the Ocean of love. He may play a part in the form of a mother, in the form of a father, in the form of a teacher, but he sustains only with love. And He does not become Dharmaraj. And despite ruling with love, does He bring downfall or does He uplift them?

Student: He uplifts them.

बाबा— ऊपर उठाता है। ऐसा श्रेष्ठ शासन और किसी युग में और कोई आत्मा न करेगी और न किसी ने किया है। इसलिए हर धर्म में गॉडफादर की इतनी मान्यता है। वो प्यार का शासन

करता है। मनुष्य ऐसा प्यार का शासन नहीं कर सकते। मनुष्यात्माओं में देहभान रहता है शासन करनेवालों में। थोड़ी सी कुर्सी मिल जाये फिर देखो, अभी यहाँ सबको दास बना के रखूँ।
“प्रभुता पाहि काहि मद नाहि”

जिज्ञासु— लेकिन बाप कहते हैं मैं ओबिडियन्ट सर्वेन्ट हूँ।

बाबा— और बाप क्या कहते हैं? बच्चे आय एम योर ओबिडियन्ट सर्वेन्ट। मैं तुम्हारा आज्ञाकारी सर्वेन्ट बनकर के आया हुआ हूँ। प्यार से, प्यार से ऑर्डर करो, आज्ञा करो और मैं तुम्हारी सेवा करूँ।

Baba: He uplifts them. No other soul will [rule] or has ruled in such a righteous way in any other Age. This is why God the Father is respected so much in every religion. He rules affectionately. The human beings cannot rule so affectionately. Human souls who rule are body conscious. Look at them when they get a seat (power) for a while, [they will think:] let me make everyone here my servants. ‘Prabhuta pahi kahi mad nahi’ (Who does not become egotistic on getting power).

Student: But the Father says – I am an obedient servant.

Baba: And what does the Father say? Children, I am your obedient servant. I have come as your obedient servant. Order me affectionately and I will serve you.

Time 34.00-34.45

जिज्ञासु— कहते हैं न, जितना जितना कायदा उतना उतना फायदा।

बाबा— हाँ जी।

जिज्ञासु—ये स्पष्ट है की प्यूरिटी जो भंग होती है, उससे जास्ती नुकसान होता है। किस कायदा को भंग करने से कम नुकसान होता है और किस कायदे को भंग करने से जास्ती नुकसान होता है?

बाबा— कोई भी कायदा है। कोई एक कायदे को एक परसेंट फॉलो करता है और 99 परसेंट फॉलो नहीं करता है तो वही कायदा ज्यादा नुकसानदायक बन जायेगा। अगर कोई उसी कायदे को 99 परसेंट फॉलो करता है और एक परसेंट फॉलो नहीं कर पाता है तो ज्यादा फायदेमंद हो जायेगा।

जिज्ञासु— हरेक कायदा ऐसा होता है?

बाबा— हाँ जी। कोई भी कायदे कानून की बात हो।

Student: It is said, the more we follow a rule, the more benefit it brings, isn't it?

Baba: Yes.

Student: It is clear that when there is breach of purity, it brings great damage. Breaking which rule will result in less damage and breaking which rule will result in greater damage?

Baba: Whichever rule it may be; if someone follows a rule one percent and does not follow it 99 percent, then that rule will bring more damage. If someone follows the same rule 99 percent and is not able to follow it one percent then it will become more beneficial.

Student: Is it so for every rule?

Baba: Yes. It may be the case of any rule/regulation.

39.30-49.05

जिज्ञासु— बाबा, आकारी माना जो सूक्ष्मशरीर धारण करती हैं ना। सूक्ष्म शरीर धारण करती हैं। एक बार बाबा ने कहा वो महापापी की लिस्ट में आती हैं। सूक्ष्मशरीर धारण करनेवाला.....

बाबा— हाँ, जी, हाँ जी।

जिज्ञासु— वो महापापी की लिस्ट में आती हैं एक कैसेट में सुना।

बाबा— ठीक है।

जिज्ञासु— ये दादा लेखराज जो अभी सूक्ष्मशरीर में हैं वो कौनसी महापाप किया है वो शरीर उसको मिला है? राम के बाद वो इतनी श्रेष्ठ आत्मा हैं...

बाबा— हाँ।

जिज्ञासु— और दूसरी तरफ सूक्ष्मशरीर धारण किया है और महापापी की लिस्ट में आया है। कौनसी महापाप किया है जो उनका लिस्ट में उसको डाला है।

Time: 39.30-49.05

Student: Baba, souls assume a subtle form, i.e. a subtle body, don't they? They assume a subtle body. Baba had once said that they are included in the list of the most sinful ones. The one who assumes a subtle body....

Baba: Yes, yes.

Student: I heard in a cassette that they are included in the list of the most sinful ones.

Baba: It is correct.

Student: Which greatest sin has Dada Lekhraj, who is now with a subtle body, committed that he got that (subtle) body? After Ram, his soul is so righteous soul...

Baba: Yes.

Student: And on the other side he has assumed subtle body and is included in the list of the most sinful ones. Which greatest sin has he committed that he is included in that list?

बाबा— कृष्णवाली आत्मा 84 जन्म तो लेती है परंतु बाप का डायरेक्ट बच्चा नहीं बनती। डायरेक्ट बच्चा न बनने के कारण डायरेक्ट बाप से वर्सा भी नहीं लेती और बाप कहते हैं तुम बच्चों ने मेरे को पहचाना है। तुमको ऐसा बुद्धि का वरदान मिला है, वो जन्मजन्मान्तर के तुमने ऐसे अच्छे कर्म किये हैं जो तुमको ऐसा बुद्धिरूपी का पात्र मिला है जो तुमने बाप को पहचान लिया। बाप तुम्हारे में कोई गुण नहीं देखते; क्या देखते हैं? क्या गुण देखते हैं? तुम बच्चों ने बाप को पहचाना है और कोई चंद्रवंशी हो, इस्लामवंशी हो, बौद्धीवंशी हो, क्रिष्चियनवंशी हो, कोई ने भी बाप को नहीं पहचाना है। तुम ज्ञानी तू आत्मा हो, तुम्हारी आँखे खुली हुई कहेंगे या बंद आँखे कहेंगे? खुली हुई आँखे। तुम सोझरा पसंद करते हो, क्या? क्या पसंद करते हो? सोझरा पसंद करते हो। तुम्हारी अंदर से आवाज निकलती है— सोझरा कायम रहेगा, और जो आँखों के अंधे हैं, धृतराष्ट्र हैं, जिनकी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं खुलता है वो अंधे होने के कारण उनके अंदर से आवाज निकलती है— जैसे हम अंधे हैं सब अंधे हो जायें। अंधेरा कायम रहेगा, न हम सोझरे को आने देंगे और न हम इस जीवन में सोझरे में जायेंगे। तो फर्क नहीं होगा दोनों प्रकार की आत्माओं में? बहुत फर्क है।

Baba: The soul of Krishna does take 84 births, but it does not become the direct child of the Father. Because of not becoming the direct child it does not obtain the direct inheritance from the Father either. Besides, the Father says, 'You children have recognized Me. You have received such a boon of intellect; you have performed such good actions for many births that you have received such an intellect like pot that you recognized the Father. The Father does not see any [other] virtue in you; what does He see? What virtue does He see? You children have recognized the Father. No one else has recognized the Father, they may be a *Chandravanshi*, a *Islamvanshi*, a *Bauddhivanshi*, a *Christianvanshi*. You are knowledgeable souls. Will your eyes be said to be open or closed? The eyes are open. You like day/light; what? What do you like? You like light. A sound emerges from your heart that the light will persist but the blind ones, the Dhritrashtas, whose third eye of knowledge does not open; due to being blind, a sound emerges from their heart, 'Just as I am blind everyone should become blind; darkness shall prevail; neither will I let light to enter nor will I go towards light in this life'. So, will there not be a difference between both kinds of souls? There is a lot of difference.

जिज्ञासु— हम ऐसे समझते हैं हम ब्रह्मा से श्रेष्ठ हैं।

बाबा— समझते क्या हैं माना प्रैक्टिकल में हैं नहीं श्रेष्ठ? पतित तो दुनिया में बहुत होते हैं, सारे ही होते हैं, सारी दुनिया पतित हैं। ये पतित होना, ये भगवान की दृष्टि में कोई खराब बात नहीं हुई। खराब बात क्या है? (किसी ने कहा—अहंकार।) (एक) देहअभिमान को त्याग दे और एक देहअभिमान को नहीं त्यागे। तो जिन्होंने देहअभिमान को पहले त्याग दिया वो श्रेष्ठ आत्मार्ये। जिन्होंने देहअभिमान को नहीं त्यागा वो श्रेष्ठ आत्मार्ये भगवान की नजर में नहीं हैं। दुनिया के नजर में भले श्रेष्ठ हो जाये। और?

Student: We feel that we are greater than Brahma.

Baba: You not only feel..., does it mean you are not greater (than him) in practical? There are many sinful people in the world, everyone is sinful, and the entire world is sinful. Being sinful is not a bad thing in God's eyes. What is bad? (Someone said: Ego.) Someone renounces the body consciousness and someone does not renounce body consciousness. So, those who renounce body consciousness first are righteous souls; those who do not renounce body consciousness are not righteous souls in God's eyes. They may become great in the eyes of the world. Anything else?

जिज्ञासु— इसलिए तो मुरली में बोला है ना, कुमारका का, इतना—2 मान—शान है वो अंदर से इतना गंदे है। ऐसे मुरली में एक...

बाबा— जिनको बहुत मान—मर्तबा हैं वो भ्रष्टाचारी समझो और जिनको इस दुनिया में कोई मान—मर्तबा नहीं हैं, क्या? करोड़पति नहीं है भले रोड़पति हैं, गली—2 की खाक छान रहे हैं। दुनिया की दृष्टि में ऊँचे नहीं हैं लेकिन बाप की नजरों में ऊँचे हैं। और, भागीदार तो पूर्वजन्म में भी गरीब ही था, करोड़पति नहीं था, क्या? भल हीरो का व्यापारी था। दादा लेखराज से भी ज्यादा होशियार था लेकिन सच्चा व्यापारी था। झूठे हीरो के बाजार में एक छोटी सी दुकान रखनेवाला सच्चा व्यापारी था तो लोग उसको क्या समझेंगे? हं? ये झूठा हीरा बेचनेवाला होगा या सच्चा हीरा बेचनेवाला होगा? झूठा ही समझेंगे। और ब्रह्माबाबा बड़े शोक—शान से दुकान खोलकर के रहते थे। यूँ मूँछे लटकाये, बेंत लेकर के यूँ राजाओं—महाराजाओं के महलों में घुसे चले जाते थे; इसलिए कृष्ण और क्राईस्ट राशी मिलाई हैं ज्ञान में, क्यों? जो क्राईस्ट के स्वभाव—संस्कार हैं क्रिश्चियन के, पॉम्प एन्ड शो के, दिखावा करने के; वो संस्कार कृष्ण की आत्मा में भी हैं। कृष्ण की आत्मा से क्रिश्चियन ने उठाये हैं। जो असली नहीं होता वो दिखावा करता है, जो असली होता है उसको दिखावा करने की दरकार ही नहीं। जानता है आज नहीं तो कल सच्चाई सर के ऊपर चढ़ के बोलेगी।

Student: This is why it has been said in a Murli [about] Kumarka that she gets more respect and position, she is dirtier from within. It has been said like this in a Murli.

Baba: Those who get a lot of respect and position should be considered to be unrighteous and those who do not have any respect and position in this world; what? They may not be millionaires, they may be on the roads (i.e. poor), and they may be running from pillar to post, they may not be high in the eyes of the world, but they are high in the eyes of the Father. And (Brahma Baba's) partner was poor in the past birth also; he was not a millionaire. What? Although he was a diamond merchant. He was cleverer than Dada Lekhraj, yet he was a true businessman. He was a true businessman with a small shop selling true diamonds in a market of duplicate diamonds, then what will people consider him to be [as well]? Will this one be selling false diamonds or true diamonds? They will consider him to be false only. And Brahma Baba used to maintain his shop with a lot of pomp and show. He used to display his moustaches, hold a stick and enter the palaces of kings and emperors; this is why the horoscope of Krishna and

Christ is matched in the knowledge; why? The nature and sanskar of pomp and show that is in Christ that is in Christians, those sanskars are present in the soul of Krishna as well. Christians have picked up this sanskars from the soul of Krishna. The one who is not true shows off. The one who is true need not show off at all. He knows that if not today, tomorrow truth will speak fearlessly.

जिज्ञासु— बाबा ये क्रोध की बात भी, क्राईस्ट और कृष्ण की राशि के बारे में, वो क्रोध विकार को प्रतिनिधित्व करनेवाला वो क्रिश्चियन लोग है ना बाप। क्रोध विकार की....

बाबा— हाँ, जी।

जिज्ञासु— वो कृष्ण माना दादा लेखराज ब्रह्मा में भी किस रूप से.....

Student: Baba, this issue of anger as well, it is related to the horoscope of Christ and Krishna. The Christians represent the vice, anger, isn't it so, Father? The vice of anger....

Baba: Yes.

Student: In what form is it in Krishna, i.e. Dada Lekhraj....

बाबा— एक होता है अंदर का क्रोध और एक होता बाहर का क्रोध। इसका मिसाल देते हैं हिंदू महासभा का अध्यक्ष सावरकर बाबा के पास गया, तीन दिन रहा। बाबा ने बड़ी खातरी की। उसको ये ऐसा लगा, जैसे बाबा ने हमारी इतनी खातरी की है दुनिया में कोई ने नहीं कि होगी। और जब वो चला गया तो मुरली में बोल दिया— अरे, ये थोड़े ही देवी—देवता सनातन धर्म में आवेगा। इसको आत्मिक दृष्टि कहें? नहीं कह सकते। अंदर एक और बाहर दूसरा। और अव्यक्त वाणी में ये बोला हुआ है — जो अंदर एक और बाहर दूसरा है वो इस ब्राह्मण परिवार के लिए बहुत खौफनाक और खतरनाक है। तो वो बात उनके अपने ऊपर ही लागू होती है लौकिक जीवन में। और ये खौफनाक, खतरनाक की बात भी उन तथाकथित ब्रह्माकुमारों—कुमारियों को तब पता चलेगी जब धर्मराज के डंडे बजेंगे और ये साबित होगा कि धर्मराज का पार्ट किसका है? जिनको उन्होंने समझा है ये बड़े प्यार करनेवाले, प्यार के सागर थे। तब मालूम पड़ जायेगा कि कृष्ण की आत्मा प्यार की सागर है या मार की सागर है; इसलिए बाप कहते हैं मैं धर्मराज नहीं बनता हूँ; धर्मराज मेरे साथ है। हड्डी—हड्डी तोड़ देगा।

Baba: One is inner anger and another is external anger. An example is given. Savarkar, the President of Hindu Mahasabha went to meet Baba; he stayed there for three days. Baba provided him with a splendid hospitality; He felt as if nobody offered such hospitality as Baba had offered. And when he went away, he (Brahma Baba) said in the Murli, 'He will not come in the deity religion'. Will this be called a spiritual vision? It cannot be called so. He is something inside and something else outside. And it has been said in an Avyakta Vani that the one who is something inside and something else outside is very dangerous for the Brahmin family. So, that is applicable to him in his own lokik life. And this aspect of being dangerous will be known to the so-called Brahmakumars and kumaris when Dharmaraj starts using his stick and it will be proved who plays the part of Dharmaraj. The one about whom they thought, 'he was the one who loved us a lot, he was an ocean of love'..., then they will come to know whether the soul of Krishna is an ocean of love or an ocean of beatings; this is why the Father says, 'I do not become Dharmaraj; Dharmaraj is with me. He will break each and every bone'.

नेल्लूर (आं.प्र.) तारिख—30.1.08
Nellore (Andhra Pradesh) Dt. 30.1.08

0.00—1.08

जिज्ञासु— अभी—अभी बाबा ने बोला कि सेवाधारी बनना है। इसका मतलब क्या है?

बाबा— ऑटोमेटिक पुरुषार्थ हो जाये। जब याद लगातार रहेगी तो बाबा सारा काम कराता है, क्या? हमें ये चिंता नहीं रहती है कि ये करना है, कि वो करना है। जो भी करना होगा ऑटोमेटिक याद आता जायेगा। कुछ काम बिगड़ने, बिगड़ने नहीं देगा। क्या करना है सिर्फ? मुझे याद करो। और ये बहुतों को अनुभव भी होगा, जिन दिनों बाबा की याद अच्छी रहती है उन दिनों जैसे सारी सेवा ऑटोमेटिक होती रहती है। क्या? चिंता करने की बात ही नहीं। कोई होते है सेवा का बहुत बोझ हो जाता है, बड़ी चिंता बढ़ जाती है। नहीं। चिंता बढ़ गई माना ऑटोमेटिक पुरुषार्थ नहीं रहा।

Time: 0.00-1.08

Student: Just now Baba has said that we have to become *sevadharis* (the ones who are engaged in service); what does it mean?

Baba: The *purusharth* (spiritual efforts) should be done automatically. When you remember [Baba] continuously, Baba makes [us] perform all the tasks. What? We do not have the worry that we have to do this, we have to do that. Whatever we have to do will automatically come to our mind. He will not allow any task to go awry. What do you have to only do? Remember Me. And many must have also experienced that on the days when they remember Baba nicely, the entire service keeps happening automatically. What? There is no need to worry at all. There are some [who feel that] the service is very burdensome; they worry a lot. No. If the worries increase, then it means that the *purusharth* is not automatic.

1.12—3.30

जिज्ञासु— ब्रह्मा मूर्ति का पार्ट को 33 इयर्स गया ना, शंकर मूर्ति का पार्ट 33 इयर्स चलता है ना। शंकर का पार्ट 2006 तक फिर विष्णु का पार्ट से चलना है न बाबा?

बाबा— माना शंकरवाली आत्मा विष्णु नहीं बनती या ब्रह्मावाली आत्मा विष्णु नहीं बनती? क्या कहना चाहते है? ये विष्णु पार्टीवालों ने समझा दिया शंकर खत्म हो गया, शंकर का पार्ट खत्म हो गया। क्या? ये राँग बात है। ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नुँधा हुआ है। ये अव्यक्त वाणी में बोला कि नहीं बोला?

जिज्ञासु— बोला।

बाबा— तो जब ब्रह्मा का ही पार्ट स्थापना का कार्य में अंत तक नुँधा हुआ है तो शंकर का काम क्या खत्म हो गया? दुनिया का विनाश हो गया क्या? अच्छा, ब्राह्मणों की दुनिया का विनाश हो गया क्या? ब्राह्मणों की दुनिया में दूसरे—2 धर्मों की आत्मायें नहीं घुसी हुई है?

बाबा— ये सब अंत तक चलता रहता है।

Time: 1.12-3.30

Student: The part of Brahma's personality (*murti*) was played for 33 years; the part of Shankar's personality is played for 33 years; Shankar's part was played till 2006 ; then Vishnu's part....should go on, isn't it Baba?

Baba: Does it mean that the soul of Shankar does not become Vishnu or the soul of Brahma does not become Vishnu? What do you want to say? Those from the Vishnu Party have explained to you that Shankar is finished; Shankar's part has ended. What? This is wrong.

Brahma's part is fixed in the task of establishment till the end. Has it been said in the Avyakta Vani or not?

Student: It has been said.

Baba: When even Brahma's part is fixed in the drama till the end, then did Shankar's task finish? Has the world been destroyed? OK, has the world of Brahmins been destroyed? Have the souls of other religions not intruded in the world of Brahmins?

Student said something.

Baba: All this goes on till the end.

जिज्ञासु— लेकिन वो माता का अर्थ यही है 33 साल विष्णु का पार्ट भी चलना है ना और कब से शुरू होगा?

बाबा— चल रहा है। ब्रह्मा वाली मूर्ति, शंकर वाली मूर्ति भी किसको सहयोग दे रही है? किसका आवाहन कर रही है?

जिज्ञासु— विष्णु।

बाबा— तो आवाहन करना, ये पार्ट नहीं है? शंकर जी के पिछाड़ी जब भस्मासुर पड़ा तो सारी दुनिया में दौड़ते फिरे। आखरीन उनको कौन याद आया? विष्णु याद आया ना। तो आवाहन करना पड़े ना। ये भी एक पार्ट हुआ ना।

जिज्ञासु— प्रैक्टिकल पार्ट।

बाबा— प्रैक्टिकल वो ही करेगा जो प्योरिटी वाला होगा। जन्मजन्मान्तर प्योरिटी की पॉवर रानियों में रही हैं या राजाओं में रही हैं? रानियों में रही हैं। तो रानियों का संगठन सामने जब तक नहीं आयेगा तब तक प्रैक्टिकल कुछ भी होगा ही नहीं।

Student: But that mother wants to say that Vishnu's part has to go on for 33 years, hasn't it? And when will it begin?

Baba: It is going on. Whom is Brahma's *murti*, Shankar's *murti* also supporting? Whom are they calling?

Student: Vishnu.

Baba: So, to call; is it not a part? When Bhasmasur started chasing Shankarji, he ran everywhere in the world; then ultimately whom did he remember? He remembered Vishnu, did he not? So, he will have to call him, will he not? This is also a part, isn't it?

Student: The practical part.

Baba: Only the one who has purity will do in practical. Did the queens or did the kings have the power of purity for many births? The queens had (the power of purity). So, until the gathering of queens is revealed, nothing will happen in practical at all.

3.33—6.25

जिज्ञासु— पण्डा के पुत्र पाण्डव, उनका पुरुषार्थ गुप्त, धन गुप्त, सम्बन्ध, समय, सम्पर्क सब कुछ गुप्त होता है ना। माताओं—कन्याओं को सरेन्द्र करते हैं, वो गुप्त नहीं होता है ना। बाहर दुनियावालों को पता चलता है ना। तो वो कैसा क्या होगा?

बाबा— लेकिन कागज पर लिख देने से पता लग जाता है कि ये सरेन्द्र है या नहीं है? सरेन्द्र होना अंदर की बात है या बाहर की बात है? मान लो कागज पर किसी को स्टैम्प पेपर में लिख दिया गया या खून से भी यज्ञ के आदि में बहुतों ने लिखा। तो खून से लिख देने से या स्टैम्प पेपर पर लिख देने से असली सरेन्द्र हो जाता है क्या? हो जाता है?

जिज्ञासु— नहीं।

Time: 3.33-6.25

Student: The sons of Panda are Pandavs; they make purusharth secretly, their money, relationship, time, contact, everything is hidden. When someone surrenders the mothers and virgins, that is not hidden, isn't it? The people of the outside world come to know about it, don't they? So, what about it?

Baba: But do they come to know whether someone has surrendered [himself] or not when they give it in writing? Is the issue of surrendering [oneself] related to the inner self or the outer self? Suppose someone gives it in writing on a stamp paper or many people wrote with their blood in the beginning of the yagya; so, does someone surrender [himself] in a real sense just by writing with blood or on a stamp paper? Does he?

Student: No.

बाबा— इसलिए बोला कि तुम बच्चों का दान, मान, पद, पुरुषार्थ, सब कुछ गुप्त। तुम पाण्डव हो ही गुप्त। और जिनका गुप्त पुरुषार्थ रहता है, दूसरों को पता नहीं चलने देते; लेकिन अंदर से बहुत अच्छे पुरुषार्थी होते हैं, वही सफल होते हैं।

जिज्ञासु— नहीं बाबा, बाहर दुनिया के समझ में नहीं आते हैं ना। उनका बच्चे, कन्यायें—माताएं आते हैं न, सरेन्द्र होते हैं ना तो कैसा पता?

बाबा— वो सरेन्द्र होते हैं लेकिन अंदर से सरेन्द्र हुए हैं क्या? अंदर से, उनके अंदर ये भाव आ गया कि हम एक बाप के बन गये; अगर बन गये तो माया पहले क्यों सरेन्द्र होती है ऐसा क्यों कहा? नहीं समझ में आया?

जिज्ञासु— बाहर की दुनियावालों को पता चलता है ना।

Baba: This is why it has been said that the donation, respect, post, purusharth of you children is all hidden. So, Pandavas were hidden. And those who make secret *purusharth*, those who do not allow others to know, but remain a very good *purusharthi* (those who make spiritual effort) from inside become successful.

Student: No, Baba. The outside world does not understand, does it? Their children, daughters, mothers come and surrender [themselves]. So how can they...

Baba: They surrender [themselves], but have they surrendered [themselves] from inside? Have they got the feeling from within that they have become the child of one Father, if they have become, then why has it been said that maya surrenders [herself] first of all? Did you not understand?

Student: The people of the outside world come to know, don't they?

बाबा— वो तो गुप्त बात है। बाहर की दुनियावाले सिर्फ कागज की बात देखते हैं। वहाँ जाकर के बैठ गये कंधे पर चढ़कर के, बस वो देख लिया; वो कोई सरेन्द्र नहीं है। असली सरेन्द्र अंदर की बात है। तन से सरेन्द्र, क्या? तन की कर्मेन्द्रियों से सरेन्द्र — कोई काम ऐसा न होने पाये जो श्रीमत की बरखिलाफी करनेवाला हो, मन से सरेन्द्र — कोई संकल्प ऐसा न चले जो श्रीमत के बरखिलाफ हो, धन से सरेन्द्र — जो भी ईश्वरीय यज्ञ में आकर के हम काम करते हैं उससे यज्ञ की बचत होती है कि नहीं। बाप तो कहते हैं — कम खर्च बाला नशीन। कोई ढेर खर्चा कर देते हैं, खूब खाते हैं, पीते हैं, मौज उड़ाते हैं, जिनको जहाँ जैसा मिलना चाहिए वैसा नहीं होने देते। उनकी जो खुट्टे बरदारी करेगा, उनकी जो मक्खन बाजी करेगा उनके पीछे बहुत पैसा खर्च करेंगे; नहीं तो बीमारी के लिए भी खर्चा नहीं करेंगे। तो ये यज्ञ के लिये सरेन्द्र हुआ?

Baba: That is a secret. People of the outside world see only whatever is written on the paper. They just see that someone has gone there and is sitting on the shoulders (of the Father). That is not surrendering in a real sense. Surrendering in a real sense is something [from] within. Surrendered through the body... What? Surrendered the bodily organs: we should not perform any such action which is against the shrimat; surrendered the mind: no thought against the shrimat should emerge in the mind; surrendered the wealth: whatever we do after entering the *yagya* leads to savings for the *yagya* or not? The Father says: less expenditure more fame. Some indulge in a lot of expenditure, eat a lot, drink a lot, enjoy; they do not allow people to get what they deserve; they spend a lot of money on those who serve them, those who flatter them; otherwise, they do not even spend for illness (of those who do not serve them). Is such a person (deemed to be) surrendered in the *yagya*?

6.44–8.52

जिज्ञासु— बाबा वो माता पूछ रही हैं रामवाली आत्मा अपने विकर्मों को भस्म करने के लिए जन्म-मरण में न आनेवाले शिव बिन्दु आत्मा का कैसे याद कर सकती है? कैसे पहचान सकती है?

बाबा— कैसे पहचान सकती है! क्यों उसको ज्ञान नहीं है कि परमात्मा किस तन में आया हुआ है? रामवाली आत्मा को ज्ञान नहीं है इस बात का? अरे, हाँ, ना, कुछ तो करो।

जिज्ञासु— प्रश्न माताजी का ही था।

बाबा— माताजी के प्रश्न को भी समझो पहले। जो रामवाली आत्मा है उसको इस बात का ज्ञान नहीं है की वो निराकार शिव जो है वो किस तन में आता है, मुकर्रर रूप से? अगर ज्ञान नहीं है तो दूसरों को सुना भी नहीं सकता। जब दूसरों को सुना नहीं सकता, समझा नहीं सकता तो फिर किसी को पता ही नहीं चलेगा याद क्या है और कैसे याद करें? तो पहले रामवाली आत्मा को पता चले कि याद का असली रूप क्या है? असली तरीका क्या है? वो खुद ही याद का तरीका नहीं जानता होगा, नहीं करता होगा तो दूसरों को कैसे सुनावेगा, कैसे समझावेगा, कैसे कोई दूसरा उस याद में टिकेगा। रामवाली आत्मा भी साकार में निराकार को ही याद करती है।

Time: 6.44-8.52

Student: Baba, that mother is asking how the soul of Ram can remember the point-like soul Shiv who does not pass through the cycle of birth and death in order to burn his sins? How can he recognize Him?

Baba: How can he recognize Him? Why? Does he not have the knowledge about the body in which the Supreme Soul has entered? Does the soul of Ram not know this? Arey, at least say 'yes' or 'no'.

Student: The mother had asked this question.

Baba: First understand the mother's question too. Does the soul of Ram not know in which body the incorporeal Shiva comes in a permanent way? If he does not have this knowledge, he cannot tell others either. When he cannot tell others, when he cannot explain to others, then nobody would come to know at all what remembrance is and how to remember [the Father]. So, first the soul of Ram should know what is the true form of remembrance? What is the correct method? If he does not know the method of remembrance himself, if he does not remember [that way] himself then how will he narrate to others, how will he explain to others, how will others become constant in that remembrance? The soul of Ram also remembers the incorporeal within the corporeal.

जिज्ञासु— अपने ही तन में ही याद..

बाबा— वो साकार तन नहीं है?

जिज्ञासु— है।

बाबा— वो और सहज याद है या कठिन याद?

जिज्ञासु— सहज याद।

बाबा— वो तो और सहज हो गया। उसको फॉलो करने के लिए बड़े—2 गुरुओं ने, महर्षियों ने, शंकराचार्यों ने, महात्माओं में, विद्वानों ने, पंडितों ने, आचार्यों ने क्या कहना शुरू कर दिया? शिवोहम्।

जिज्ञासु— मैं ही शिव हूँ।

बाबा— हाँ, मैं ही शिव हूँ। अरे, कहने से थोड़े ही शिव हो जायेगा।

Student: He remembers in his own body...

Baba: Is it not a corporeal body?

Student: It is.

Baba: So, is it more easy remembrance or difficult remembrance?

Student: Easy remembrance.

Baba: It became easier. In order to follow him what did the big gurus, Maharshis (saints), Shankaracharyas, Mahatmas (great souls), scholars, pundits, teachers start to say? Shivoham (I am Shiv).

Student: I am Shiv.

Baba: Yes, I am Shiv. Arey, does anyone become Shiv just by saying so?

8.56—11.38

जिज्ञासु- बाबा सूक्ष्मवतन तो ४० साल का बता दिया ना मुरली में। तो सूक्ष्मवतन तो 40 साल का बताया ना अभी आत्मार्ये शरीर छोड़ते है वो कहाँ है?

बाबा- कब से 40 साल कहा है?

जिज्ञासु- 69 से।

बाबा- 69 में 40 साल हो जाते हैं

जिज्ञासु- 76 तक।

बाबा- 76 में 40 साल हो जाते हैं। तो 76 में 40 साल किस के लिए बोला ६ पाँच सौ करोड़ आत्माओं के लिए?

जिज्ञासु-...

Time: 8.56-11.38

Student: In the Murlis it has been mentioned that the subtle world is for 40 years. So, the subtle world is said to exist for 40 years, but where are the souls who are leaving their bodies now?

Baba: From which time was it said 40 years?

Student: From (19)69.

Baba: Were 40 years completed in (19)69?

Student: Till (19)76.

Baba: 40 years are completed in (19)76. So, for whom was it said 40 years in (19)76? Was it said for five billion souls?

Student said something.

बाबा- बस एक ही आत्मा के लिए बोला है । तो उसका सूक्ष्मवतन खत्म हो गया। वो तो जब तक पूरी सृष्टि का विनाश न हो तब तक इसी साकार सृष्टि पर रहना है कि सूक्ष्मवतन में जाना है? अभी क्या मुरली में बोला? सभी आत्मार्ये जाती है या सूर्यवंशी आत्मार्ये भी जाती है सूक्ष्मवतन में? जाना है उनको?

जिज्ञासु- नहीं जाना है।

Baba: It was said just for one soul. So, the subtle world ended for him. Does he have to live in this corporeal world until the entire world is destroyed or does he have to go to the subtle world? What was said in the Murlis just now? Do all the souls go [to the subtle world] or do the *Suryavanshi* souls also go to the subtle world? Do they have to go?

Student: They don't have to go.

बाबा- जो असल सूर्यवंशी आत्मार्ये हैं उनको तो नई दुनिया बनानी है यहाँ पर, पुरानी दुनिया का विनाश भी होना है उनकी आँखों के सामने। तब वापस जावेगी। वो जब वापस जावेगी तब सूक्ष्मवतन की दरकार ही नहीं रहेगी। वो सूक्ष्म शरीर धारण भी नहीं करती। शरीर में रहते ही सूक्ष्म स्टेज बनाके रहती है, मनन-चिंतन-मंथन की स्टेज में रहती है। शरीर में रहकर निराकारी, साकारी और आकारी, निराकारी स्टेज नहीं बनाई जा सकती? जो नहीं बना सकते हैं उनको फिर सूक्ष्मवतन बना हुआ है। जो शरीर रहते ही निराकारी, आकारी और साकारी स्टेज में प्रैक्टिस करनेवाले है उनको वहाँ जाने की क्या जरूरत शरीर छोड़ करके। तो ऐसे नहीं कि सन् 76 तक 40 वर्ष का सूक्ष्मवतन खत्म हो गया सबके लिए। नहीं। जिसने शरीर रहते ऐसी स्टेज बना ली उसके लिए सूक्ष्मवतन, साक्षात्कार का मूल्य, कोई मूल्य नहीं रहा। साक्षात्कार से कुछ लेना-देना नहीं। साक्षात्कार अगर हो भी जाये तो भी उन्हें कोई खुशी, खुशी नहीं आवेगी। मुरली में तो बोला हुआ है - जो कहते है कि हमको साक्षात्कार हो तब हम मानेंगे भगवान आया हुआ है। मुरली में बोला है उनको चलाए देना चाहिए। जाओ।

Baba: The true *Suryavanshi* souls have to build a new world here; the old world also has to be destroyed in front of their eyes; then they will return (to the soul world). When they return, there will not at all be any need for the subtle world. They do not at all assume a subtle body. While living in the body they remain in a subtle stage. They remain in a stage of thinking and churning. Can't we achieve a corporeal, subtle, and incorporeal stage while living in the body? For those who cannot achieve such stage, the subtle world has been created. Those who practice being in incorporeal, subtle and corporeal stage while being in the body, where is the need for them to leave the body and go there. So, it is not so that the 40 years subtle world has ended in (19)76 for everyone. No. For the one who achieved such a stage while being in the body, there is no value or importance of the subtle world, [or] visions. They have nothing to do with visions. Even if they have visions, it will not bring any joy to them. It has been said in the Murlis: 'those who say that they will accept that God has come when they have visions'; it has been said in the Murlis that they should be asked to leave. 'Go'.

20.35–20.00

जिज्ञासु— बाबा संगमयुग में शंकराचार्य कौन हैं ये पूछ रहे हैं माताजी?

बाबा— ब्राह्मणों में?

जिज्ञासु— हाँ।

बाबा— ब्राह्मणों में जो भी गद्दी जमा के बैठते हैं सो शंकराचार्य। मठ—पंथ बना के बैठते हैं ना। उनसे कहा जाये तुम्हारा ट्रान्सफर हो रहा, तो मानेंगे? अपना मठ—पंथ छोड़ने के लिए तैयार होते हैं? जहाँ जम के बैठ गये बस वहाँ जोनल इंचार्ज बन के बैठ गये।

Time: 20.35-20.50

Student: Baba, this mataji is asking who is Shankaracharya in the Confluence Age?

Baba: Among Brahmins?

Student: Yes.

Baba: Whoever occupies a throne (*gaddi*) among Brahmins is a Shankaracharya. They establish *math-panth* (sects), don't they? If they are told that they are being transferred (to some other center), will they accept it? Do they agree to leave their *math-panth* (i.e. BK centers)? Wherever they have established themselves, that is all, they become zonal *in-charges* (heads) of that place and sit there.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.